

## 125 Years of Ramakrishna Mission

1 May 2022 marked the 125th anniversary of the Ramakrishna Mission, a social service organization with a spiritual outlook. It was founded in 1897 by Swami Vivekananda, the seer of modern India, to work for the all-round development of India.

Swami Vivekananda, known in his pre-monastic life as Narendra Nath Datta, was born in an affluent family in Kolkata on 12 January 1863. By the time he graduated from Calcutta University, he had acquired a vast knowledge of different subjects, especially Western philosophy and history. Born with a yogic temperament, he used to practise meditation even from his boyhood, and was associated with Brahma Movement for some time.

In November 1881, Narendra went to meet Sri Ramakrishna, his spiritual guru, who was staying at the Kali Temple in Dakshineswar. Apart from removing doubts from the mind of Narendra, Sri Ramakrishna won him over through his pure, unselfish love. Thus began a guru-disciple relationship which is quite unique in the history of spiritual masters.

During his travels all over India, Swami Vivekananda was deeply moved to see the appalling poverty and backwardness of the masses. To carry out his plans for the spread of education and for the uplift of the poor masses, and of women, Swami Vivekanand, felt the need of an efficient organization of dedicated people. He wanted "to set in motion a machinery which will bring noblest ideas to the doorstep of even the poorest and the meanest." It was to serve as this 'machinery' that Swami Vivekanand founded the Ramakrishna Mission in the year 1897. It was registered as a society in 1909.

For the last 125 years, the Ramakrishna Mission has distinguished itself through its various service based programmes. It extends service in the areas of healthcare, education, rural and tribal development, disaster relief and rehabilitation, general welfare, spiritual and cultural work, publication of books and journals and other fields. It runs hospitals, dispensaries, homes for the aged, orphanages, schools, colleges, polytechnics, ITIs, a deemed university, agricultural institutes, and special institutions for the disadvantaged sections of society. It's charitable and philanthropic works have found wide acceptance and appreciation by the public.

Members of the mission provide services to the people as means to the attainment of the ultimate goal of human life, which, according to Sri Ramakrishna, is realization of God. Here charity to the poor and needy is prompted not by egotistic compassion, but is conceived as service rendered in a spirit of worship of God,

who resides in every human being. Instead of looking upon a needy person as an object of pity, he is looked upon as an object of worship. Owing to this spiritual outlook, the services conducted by the mission are meant for the benefit of all people - without any distinction based on religion, caste, colour or class.

The main workforce of the Ramakrishna Mission consists of dedicated monks who are members of the Ramakrishna Math. Though the Mission and the math are distinct legal entities, they are referred to as twin organizations, and they join hands in running all the service activities. As of February 2023, there are 202 branches of the Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission, spread over 27 states / Union Territories of India. Outside India, the organization has 67 branches in 24 countries. The headquarters of the twin organizations is located at Belur Math in Howrah district, West Bengal.

Perfect accountability, efficient management, and sincere and honest enterprise are some of the hallmarks of the work of the Ramakrishna Mission. The Mission has received several awards and recognitions for its selfless service, including the prestigious Gandhi Peace prize for the year 1998, conferred by the Government of India. The prize carried a citation that noted, "The Ramakrishna Mission has become a great source for peace and happiness amongst people in this country and abroad."

The motto of Ramakrishna Mission, set by Swami Vivekananda, is "For one's own salvation and for the welfare of the world." Endowed with this lofty ideal and sustained by the dedication of its members, the Ramakrishna Mission is expanding its influence with time. 125 Years is a significant milestone in the Mission's journey to bring about spiritual regeneration of humanity.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on 125 Years of Ramakrishna Mission and appreciates its contribution in promoting spirituality, service and humanity, all over the world.

### Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Shri Suresh Kumar  
Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta  
Text : Referenced from content provided by Proponent



डाक विभाग  
Department of Posts

रामकृष्ण मिशन के १२५ वर्ष  
125 YEARS OF RAMAKRISHNA MISSION



विवरणिका BROCHURE

## रामकृष्ण मिशन के १२५ वर्ष

आध्यात्मिक विचारधारा से प्रेरित समाजसेवी संगठन 'रामकृष्ण मिशन' ने 1 मई, 2022 को अपनी स्थापना के 125 वर्ष पूरे किए। इस मिशन की स्थापना, आधुनिक भारत के संत स्वामी विवेकानंद द्वारा 1897 में की गई। इस मिशन का उद्देश्य भारत के समग्र विकास की दिशा में कार्य करना है।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता के एक समृद्ध परिवार में हुआ। संन्यासी जीवन अपनाने से पूर्व उन्हें नरेंद्रनाथ दत्त के नाम से जाना जाता था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के साथ-साथ उन्होंने विभिन्न विषयों, विशेषकर पाश्चात्य दर्शन और इतिहास का व्यापक ज्ञान अर्जित कर लिया था। बचपन से ही योगी जीवन में रुचि रखने वाले स्वामी विवेकानंद किशोरावस्था से ही ध्यान लगाने का अभ्यास किया करते थे। वे कुछ समय के लिए ब्रह्म आंदोलन से भी जुड़े।

नवंबर 1881 में, नरेंद्रनाथ दत्त अपने आध्यात्मिक गुरु श्री रामकृष्ण से मिलने दक्षिणेश्वर के काली मंदिर गए। वहां श्री रामकृष्ण ने न केवल उनकी शंकाओं का समाधान किया, बल्कि अपने पवित्र और निःस्वार्थ प्रेमभाव से उनका हृदय भी जीत लिया। श्री रामकृष्ण से प्रभावित नरेंद्रनाथ ने उन्हें अपना गुरु मान लिया और इस प्रकार, गुरु-शिष्य का एक ऐसा संबंध स्थापित हुआ, जो आध्यात्मिक गुरुओं के इतिहास में अत्यंत अनूठा है।

देशभर में अपने भ्रमण के दौरान, स्वामी विवेकानंद आमजन की निर्धनता और दयनीय पिछड़े हालात देखकर अत्यंत विचलित हो गए। उन्होंने यह महसूस किया कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार और निर्धन जन एवं महिलाओं के उत्थान के लिए एक समर्पित कुशल संगठन बनाया जाए। वे एक ऐसा संगठन बनाने का उद्देश्य रखते थे जोकि गरीब से गरीब और निचले तबके के लोगों तक आदर्शवादी विचारधारा का प्रसार कर सके। उनके इसी स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से वर्ष 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की गई। इस मिशन को आगे चलकर 1909 में सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया।

विगत 125 वर्षों के दौरान, रामकृष्ण मिशन ने अपने सेवा आधारित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से एक अलग पहचान बनाई है। यह मिशन स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण एवं जनजातीय विकास, आपदा राहत कार्य एवं पुनर्वास, सामान्य कल्याण के क्षेत्रों सहित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पुस्तकों एवं जर्नलों के प्रकाशन और अनेक अन्य माध्यमों से समाज सेवा करता रहा है। इस मिशन द्वारा अनेक अस्पताल, औषधालय, वृद्धाश्रम, अनाथालय, स्कूल, कॉलेज, पॉलिटेक्निक, अनेक आईटीआई, एक मानित विश्वविद्यालय, कृषि संस्थान और समाज के वंचित वर्गों के लिए विशेष संस्थाएं भी चलाई जा रही हैं। इस मिशन द्वारा किए जा रहे धर्मार्थ एवं सर्व जन हिताय कार्यों को जनसामान्य ने व्यापक रूप से सराहा है।

रामकृष्ण मिशन से जुड़े लोगों के लिए जन सेवा, मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति का साधन है। निर्धनों और जरूरतमंदों की मदद करुणा के भाव से नहीं, बल्कि ईश्वर की सेवा और आराधना के

रूप में की जाती है, क्योंकि उनका मानना है प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास है। इसी भाववश, किसी जरूरतमंद व्यक्ति को दया का पात्र न मानकर पूजनीय माना जाता है। इसी आध्यात्मिक दृष्टिकोण के फलस्वरूप, इस मिशन द्वारा किए जा रहे कार्य धर्म, जाति, रंग अथवा वर्ग के भेदभाव से परे सभी के हितार्थ समर्पित हैं।

रामकृष्ण मिशन के कार्यों को आगे बढ़ाने में इस उद्देश्य हेतु विशेष रूप से समर्पित भिक्षुओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जोकि रामकृष्ण मठ के सदस्य हैं। हालांकि, मिशन और मठ दो अलग-अलग इकाइयां हैं, परंतु इन्हें जुड़वां संगठन कहा जाता है। ये दोनों संगठन, सेवा संबंधी सभी कार्यक्रमों का संचालन मिलकर करते हैं। फरवरी, 2023 तक, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन की देशभर के 27 राज्यों/संघ राज्य-क्षेत्रों में कुल 202 शाखाएं कार्यरत हैं। भारत के बाहर, इस संस्था की 24 देशों में 67 शाखाएं हैं। इस जुड़वां संगठन का मुख्यालय, पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के बेलूर मठ में स्थित है।

सर्वोच्च उत्तरदायित्व का भाव, कुशल प्रबंधन और निष्ठापूर्ण उद्यमिता, रामकृष्ण मिशन की प्रमुख पहचान है। इस मिशन को निःस्वार्थ सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा 1998 में प्रदत्त प्रतिष्ठित गांधी शांति पुरस्कार सहित अनेक अन्य पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। गांधी शांति पुरस्कार के साथ प्रदान किए गए प्रशस्ति पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि "रामकृष्ण मिशन, देश के साथ-साथ विदेश में भी, आमजन के जीवन में शांति और प्रसन्नता के संचार का प्रमुख माध्यम बनकर उभरा है।"

स्वामी विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन के लिए निर्धारित आदर्श वाक्य है "आत्मानो मोक्षार्थं जगद्धिताय च" अर्थात् "आत्मा की मुक्ति के साथ-साथ विश्व का कल्याण"। इस विराट आदर्श से ऊर्जस्वित और मिशन के सदस्यों के समर्पण भाव से संचालित रामकृष्ण मिशन के प्रभाव क्षेत्र का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। मानवता के आध्यात्मिक पुनरुत्थान की दिशा में इस मिशन की यात्रा के 125 वर्ष पूरे होना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

डाक विभाग, विश्वभर में अध्यात्म, सेवाभाव और मानवता के प्रचार-प्रसार में रामकृष्ण मिशन के योगदान की सराहना करते हुए, 'रामकृष्ण मिशन के 125 वर्ष' विषय पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

### आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री सुरेश कुमार

विवरणिका

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

## तकनीकी आंकड़े

### TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00